



संस्कृत वाङ्मय में परिवार प्रबन्धन

सम्पादक

डॉ० विश्वजीत कुमार 'विद्यालंकार'

सह-सम्पादक

डॉ० कृपाशंकर पाण्डेय

श्री विष्णु प्रभाकर

ज्योतिन्द्र कुमार विश्वकर्मा

संस्कृत वाङ्मय में परिवार-प्रबन्धन

(Family Management in Sanskrit Literature)

सम्पादक

डॉ. विश्वजीत कुमार 'विद्यालंकार'

सह-सम्पादक

डॉ. कृपाशंकर पाण्डेय • विष्णु प्रभाकर • ज्योतिन्द्र कुमार विश्वकर्मा

द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
16-17 अप्रैल 2026

प्रकाशन हेतु प्राप्त शोधपत्रों का संग्रह

द्वारा

संस्कृत विभाग

आर.डी. एण्ड डी.जे. कॉलेज, मुंगेर

&

स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग, मुंगेर विश्वविद्यालय, मुंगेर



शिवालिक प्रकाशन
दिल्ली

प्रथम संस्करण : 2026

मूल्य : 2500.00

ISBN : 978-93-48433-01-5

इस पुस्तक का कोई भी भाग किसी भी रूप में या किसी भी अर्थ में प्रकाशक एवं लेखक की अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता। सर्वाधिकार लेखक के अधीन है।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक :

शिवालिक प्रकाशन

4759/XI, 23 अंसारी रोड, दरियागंज

नई दिल्ली-110002

फोन : 011-42351161

ई-मेल : shivalikprakashan@yahoo.com

शाखा कार्यालय

प्लॉट सं. 394, संजय नगर कालोनी

पहरिया, रामदत्तपुर, वाराणसी (उत्तर प्रदेश)

International Branch:

64, Grant Boulevard, Dundas

Ontario, Canada L9H 4M1

भारत में प्रकाशित

विरेंद्र तिवारी द्वारा शिवालिक प्रकाशन 4648/21, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित। शब्द संयोजन : एस.के. ग्राफिक्स, दिल्ली और आर.के. ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

**SANSKRIT VAANGMAY MEIN
PARIVAR-PRABANDHAN**

By : Dr. Vishvajeet Kumar 'Vidyalankar'

अनुक्रम

शोध-शीर्षक	शोधकर्ता/शोधकर्तृ	पृ.सं.
1. कुटुम्बं नाम वैशिष्ट्यं भारतीयं पुरातनम्	डॉ. नौनिहालगौतमः	11
2. महाभारते पारिवारिकप्रबन्धनम्	डॉ. संजय कुमार ठाकुर	14
3. वेदेषु गार्हस्थ्य-प्रबन्धनम्	डॉ. अशोक कुमार	25
4. भारतीयनीतिशतके पारिवारिकप्रबन्धनम् : एकमनुशीलनम्	सत्य प्रकाश कंठः	46
5. वसुधैव कुटुम्बकम् : भारतीयपरिवारचिन्तनालोके वर्तमानसमाजसन्दर्भे	तनुश्री-भुँइया	53
6. अभिज्ञानशकुन्तलनाटके पारिवारिकप्रबन्धनानुचिन्तनम्	शुभजित्-फौजदारः	64
7. रामायणस्य सप्तकाण्डेषु परिवारस्यावधारणा	सोमनाथ माइती	71
8. संस्कृत वाङ्मय एवं भारतीय संस्कृति में परिवार प्रबन्धन : एक मीमांसा	डॉ. कृपाशंकर पाण्डेय	78
9. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में संचार-संकट और परिवार-प्रबन्धन	डॉ. मृगांक मलासी	88
10. रामायण में पारिवारिक प्रबन्धन : एक दृष्टिकोण	डॉ. कुमारी अनुराधा	100
11. बौद्ध धर्म एवं सिख धर्म में परिवार की अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन	शिवम कश्यप	108
12. अथर्ववेद में पारिवारिक प्रबन्धन	डॉ. सरिता कुमारी	115
13. कालिदासीय परिवार प्रबन्धन : कुमारसम्भवम् के सन्दर्भ में	डॉ. विश्वबन्धु उपाध्याय	122

130	36. कालिदास के महाकाव्यों में परिवार प्रबन्धन	अनोखी कुमारी	314
140	37. पुराणेषु पारिवारिक-प्रबन्धनस्य व्याकरणदृष्ट्या		
148	विस्तृतसमीक्षात्मकअध्ययनम्	डॉ. आदित्य प्रकाशः	323
158	38. वैदिक गणित और परिवार प्रबन्धन में		
167	महिलओं का योगदान	जयकृष्ण कुमार	335
173	39. पारिवारिक प्रबन्धन में भ्रातृ-भगिनी सम्बन्ध और रामायण	शुचिता	342
182	40. परिवार प्रबन्धन में स्त्रियों की भूमिका एवं महत्त्व	डॉ. रेणु कुमारी	350
189	41. वैदिक ग्रन्थों में पारिवारिक प्रबन्धन	डॉ. सुषमा कुमारी	359
197	42. ईसाई धर्मशास्त्र के वाङ्मय में परिवार		
205	प्रबन्धन में स्त्री की भूमिका	डॉ. शोभा मुर्मू	367
212	43. महाभारत में परिवार प्रबन्धन में नारी की		
	भूमिका : एक विश्लेषण	सौम्या शाम्भवी	375
	44. पंचतंत्र में परिवार प्रबन्धन	सनातन वर्मा	384
221	45. भूमण्डलीकरण के युग में पारिवारिक प्रबन्धन की बदलती		
	भूमिका का दार्शनिक विश्लेषण	वीणा राजश्री	391
229	46. सहयोग का आधार परिवार	डॉ. सुनील कुमार	400
239	47. भारतीय ग्रामीण कृषि व्यवस्था में पारिवारिक		
248	प्रबन्धन की भूमिका : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	अभिनन्दन कुमार	410
256	48. परिवार-प्रबन्धन में स्त्री की भूमिका एवं महत्त्व :		
	संस्कृत वाङ्मय के आलोक में	सुधांशु कुमार	417
268	49. गणितीय प्रतिमानों एवं संस्कृत वाङ्मय के आलोक में		
275	परिवार प्रबन्धन : एक अंतर्विषयी एवं मौलिक अध्ययन	रागिनी भारती	425
282	50. परिवार प्रबन्धन और सहकारी संघवाद : बिहार में		
289	नीति निर्माण में भूमिका	मिथुन कुमार, डॉ. मिथिलेश कुमार	437
	51. वेदों में पारिवारिक प्रबन्धन	डॉ. शिखा अग्निहोत्री	450
	52. पञ्चतन्त्र में वर्णित पारिवारिक प्रबन्धन (शोधपत्र)	राघव कुमार झा	458
298	53. An Analytical Study of Family Management		
	in Sanskrit Subhashitas	Rahul S. Satghar	467
306	54. Role of Sanatan Sanskriti in Modern Family		
	Management System: An Analytical Study	Rajni Sharma	485

वेदों में पारिवारिक प्रबन्धन

डॉ. शिखा अग्निहोत्री¹

परिवार को मानव समाज की समस्त संस्थाओं में सबसे प्राचीन, स्थाई और महत्वपूर्ण माना गया है। यह केवल जैविक संबंधों का जाल नहीं बल्कि संस्कारों, परंपराओं, नैतिकता और सांस्कृतिक मूल्यों का जीवंत केंद्र है। भारतीय संस्कृति के प्राचीनतम ग्रंथ वेद हमें वैदिक कालीन समाज, परिवार और जीवन शैली के बारे में गहन जानकारी प्रदान करते हैं। वेद हमें शिक्षा देते हैं कि परिवार ही वह मूल इकाई है जहां से व्यक्ति धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की साधना के मार्ग पर अग्रसर होता है। हिंदू संस्कृति के अनुसार परिवार केवल संबंधित व्यक्तियों का समूह ही नहीं है वरन् जीवन और आध्यात्मिकता की नींव है। गोलडस्टीन के अनुसार परिवार वह उद्गम स्थान है जहां भविष्य का निर्माण होता है। वैदिक परंपरा के अनुसार परिवार एक आध्यात्मिक और प्रशासनिक इकाई है जहां परिवार के प्रत्येक सदस्य के कर्तव्य निर्धारित किए जाते हैं। परिवार एक ऐसा मजबूत कवच है जिसके नीचे रहने वाले सभी सदस्य सदैव सुरक्षित महसूस करते हैं। समाज और राष्ट्र को प्रगतिशील बनाने में सदैव से ही परिवार नामक संस्था का विशेष योगदान रहा है क्योंकि परिवार में ही नए सदस्यों का सृजन, नवसृजित सदस्य का संस्करण और परिष्करण होता है।

वैदिक युग में पारिवारिक अवधारणा—

वेदों में परिवार को कुटुंब, गृह और संघ जैसी संस्थाओं से भी संबोधित किया गया है। परिवार निर्माण का आधार तथा नैतिकता का प्रशिक्षण केंद्र है। यहाँ व्यक्तित्व का निर्माण होता है। परिवार एक ऐसी पाठशाला है जहाँ नैतिकता, अनुशासन, मर्यादा तथा नियमितता का प्रशिक्षण दिया जाता है। पारिवारिक सदस्यों के मध्य रहकर बालक में प्रेम, एकता, सहानुभूति, दया, सदाचार, सहयोग, सामंजस्य तथा संवेदना इत्यादि मूलभूत आदर्श विकसित

¹ असिस्टेंट प्रोफेसर (संस्कृत), हिंदू कन्या महाविद्यालय, सीतापुर

हो जाते हैं। वैदिक ग्रंथों में परिवार को एक मंदिर, माता-पिता को भगवान, रिश्तों को प्रार्थना तथा सेवा को अर्पण का दर्जा दिया गया है। पारिवारिक संस्कारों के सुप्रभाव से ही बालक का शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक विकास होता है। इस प्रकार बालक के सर्वांगीण विकास में पारिवारिक शिक्षाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। परिवार में माता-पिता, भाई-बहन, दादा-दादी, चाचा-चाची तथा अन्य संबंधी भी सम्मिलित होते थे। परिवार केवल भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने का साधन मात्र ही नहीं था वरन् धर्म और संस्कृति के संरक्षण का केंद्र भी था। वैदिक कालीन युग में संयुक्त परिवार का प्रचलन था जहाँ परिवार के सभी सदस्य एकजुट होकर जीवन निर्वाह करते थे। प्रत्येक मनुष्य के समुचित विकास के लिए शारीरिक, मानसिक और आर्थिक सुरक्षा का वातावरण होना नितांत आवश्यक है और ऐसा वातावरण हमें संयुक्त परिवार में ही प्राप्त हो सकता है। संयुक्त परिवार में रहते हुए कार्यों का वितरण आसान हो जाता है साथ ही भावी पीढ़ी को सुरक्षित, सहज और स्वस्थ वातावरण भी प्राप्त होता है। संयुक्त परिवार के अंतर्गत नई पीढ़ी को आर्थिक सुरक्षा, नैतिक मूल्यों का विकास और संकट के समय सहायता मिलती थी। संयुक्त परिवार में वृद्ध नाना-नानी, दादा-दादी हमारी भावी पीढ़ी को उचित मार्ग निर्देशन प्रदान कर जीवन रूपी संग्राम के लिए तैयार करते हैं। इसलिए वैदिक युग हो या आधुनिक समय दोनों में ही संयुक्त परिवार को ही संपूर्ण परिवार माना जाता है। आज अत्यधिक औद्योगिक विकास के फलस्वरूप संयुक्त परिवार का विघटन हो रहा है किंतु संयुक्त परिवार का महत्व आज भी उतना ही है जितना तत्कालीन युग में था।

गृहस्थ आश्रम का महत्व चारों आश्रमों—ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास में गृहस्थ आश्रम को सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। यह परिवार और समाज का पोषक है। आचार्य गौतम ने संतति उत्पत्ति करने के कारण गृहस्थ आश्रम को चारों आश्रमों के आधारशिला माना है। मनुस्मृतिकार गृहस्थ आश्रम के महत्व को प्रतिपादित करते हुए कहते हैं कि जिस प्रकार सभी छोटी बड़ी नदियाँ अंत में समुद्र में ही मिल जाती हैं ठीक उसी प्रकार सभी आश्रमों के लोग गृहस्थों पर आश्रित होते हैं। मनुस्मृति में कहा गया है—

“ऋषिभ्यः पितृभ्यश्च देवेभ्यश्च आत्मनस्तथा।

अन्नं ददाति यः श्राद्धे स गृहस्थो अभिधीयते” ॥²

अर्थात् गृहस्थ ही ऋषियों, पितरों, देवताओं और समाज का पालन करता है। इसी आधार पर महाकवि कालिदास ने ‘गृहस्थ आश्रम’ को ‘सर्वोपकारक्षमं आश्रम’³ कहा है। नारी पारिवारिक प्रबंधन की रीढ़-परिवार में अन्य सदस्यों की अपेक्षा नारी का स्थान

² मनुस्मृति - ३.७७

³ रघुवंशम् - ५.१०

सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। भारतीय संस्कृति हो या आधुनिक वैश्विक दृष्टिकोण दोनों में ही नारी का स्थान सर्वोपरि है। नारी सृष्टि के अस्तित्व, निरंतरता और विकास की मूल धुरी है। प्रकृति ने नारी को निर्माण की अद्भुत शक्ति प्रदान की है वह न केवल एक संतान को जन्म देती है वरन् संपूर्ण समाज की नींव भी रखती है। जैसा की 'मनुस्मृति' में कहा गया है—

“यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।

यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः”।⁴

अर्थात् जहाँ स्त्रियों का सम्मान और आदर होता है वहाँ देवताओं का निवास होता है और जहाँ इसके विपरीत स्त्रियों का सम्मान नहीं होता है वहाँ किए गए सभी शुभ कर्म निष्फल हो जाते हैं। ऋग्वेद में गार्गी, मैत्रेयी, अपाला जैसी अनगिनत विदुषी स्त्रियाँ हुई हैं जिनका नाम आज भी बड़े आदर पूर्वक लिया जाता है। अथर्ववेद में गृहिणी को घर की अधिष्ठात्री कहा गया है—‘गृहं गृहिणीं अधितिष्ठति’⁵

चाहे गृहिणी के रूप में हो या कामकाजी महिला के रूप में हो नारी के भीतर प्रबंधन की जन्मजात क्षमता होती है। उसे पता होता है कि परिवार के सभी सदस्यों की जरूरतें पूरी करते हुए भविष्य के लिए कैसे बचत करनी है। इन समस्त उद्धरणों से यह स्पष्ट होता है कि वैदिक परंपरा में नारी को परिवार की धुरी, ज्ञान की अधिकारी, धार्मिक कर्मों की सहभागी और समाज की सम्मानित सदस्य माना जाता रहा है।

वैदिक संस्कारों का महत्व—संस्कार का शाब्दिक अर्थ है—शुद्धिकरण, परिष्कार और सुधार। मनुष्य के सूक्ष्म शरीर, स्थूल शरीर तथा आत्मा की उन्नति के लिए संस्कारों का महत्वपूर्ण योगदान है। आचार्य पाणिनि के अनुसार—‘सम्पर्युपेभ्यः करोतौ भूषणे’ अर्थात् जिनसे शरीरादि सुशोभित हो उसे संस्कार कहते हैं। मानव जीवन को नियमित, पवित्र सुसंस्कृत बनाने में सोलह संस्कारों का क्या महत्व है यह आचार्य मनु ने मनुस्मृति के निम्न श्लोक के द्वारा दर्शाया है—

“वैदिकैः कर्मभिः पुण्यनिषेकादि द्विजन्मनाम्।

कार्यः शरीर संस्कारः पावनः प्रेत्य चेह च”।⁶

वैदिक धर्मग्रंथों में जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त मनुष्य के संपूर्ण जीवन को पवित्र और अनुशासित बनाने के लिए सोलह संस्कारों का विधान किया गया है। अध्ययन शौकर्य की दृष्टि से सोलह संस्कारों को चार भागों में विभक्त किया गया है।

1. जन्म से पूर्व के संस्कार—1. गर्भाधान 2. पुन्सवन 3. सीमन्तोन्नयन।

4 मनुस्मृति - ३.५६

5 अथर्ववेद - १४.१.६४

6 मनुस्मृति - २.२६

2. शैशवावस्था के संस्कार—4. जातकर्म 5. नामकरण 6. निष्क्रमण 7. अन्नप्राशन
8. चूड़ाकर्म (मुन्डन संस्कार) 9. कर्णवेध।

3. शैक्षणिक संस्कार—11. विद्यारम्भ 12. उपनयन 13. वेदारम्भ

4. अन्तिम संस्कार—14. विवाह 15. समावर्तन 16. अन्त्येष्टि।

वैदिक काल में इन सोलह संस्कारों का महत्व केवल कर्मकांड या रीति रिवाज तक ही सीमित नहीं था बल्कि यह मनुष्य के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक शुद्धिकरण की वैज्ञानिक प्रक्रिया के रूप में प्रचलित थे। वैदिक दृष्टिकोण के अनुसार मनुष्य जन्म से केवल एक जैविक प्राणी (पशु के समान) होता है। संस्कारों के माध्यम से उसे सभ्य, सुसंस्कृत, श्रेष्ठ और समाज के लिए उपयोगी नागरिक बनाया जाता है। अच्छे संस्कार हमें बड़ों का आदर करना, दया, परोपकार, सहयोग, सामाजिक समरसता तथा सत्य के मार्ग पर चलना सिखाते हैं। संस्कारों के माध्यम से मनुष्य अपने जीवन को सार्थक बनाते हुए भौतिक तथा आध्यात्मिक लक्ष्य को प्राप्त करने में सक्षम होता है। वैदिक ऋषि मुनियों के अनुसार संस्कारों का उद्देश्य व्यक्ति के अंदर पहले से ही विद्यमान दुर्गुणों को दूर कर उसके अंदर सद्गुणों का आधान करना है तथा उसकी सृजनात्मक शक्ति को बढ़ाना है।

वैदिक आदर्श एवं शिक्षाएँ—पारिवारिक जीवन को व्यवस्थित तथा संस्कृत बनाने में वैदिक शिक्षाओं में मनुष्य का सदैव ही मार्गदर्शन किया है। सुसंस्कृत आदर्श व्यक्ति ही प्रगतिशील राष्ट्र का निर्माण करने में समर्थ हो सकता है। परिवार को सुंदर बनाने के लिए पति-पत्नी में पारस्परिक आत्मीयता का होना अत्यंत अहम् भूमिका निभाता है। पति-पत्नी के मध्य पारस्परिक प्रेम होने पर परिवार में स्थिरता, सुदृढ़ता का आधार होता है। वेदों में मानसिक मिलन के संदर्भ में शिक्षित किया गया है—

“समंजन्तु विश्वे देवाः समापो हृदयानि नौ।

सं मातरिश्वा सं धाता समुदेष्ट्री दधातु नौ” ॥⁷

भारतीय जीवन दर्शन की आत्मा संस्कार हैं। वैदिक संस्कृति में व्यक्ति के जीवन में गर्भाधान से लेकर मृत्यु पर्यंत सोलह संस्कारों की मुख्य भूमिका है। यह संस्कार ही व्यक्ति के जीवन की दिशा तय करते हैं। वैदिक संहिताओं में वृद्ध जनों की सेवा करना परम धर्म बताया गया है—

पुनन्तु मा पितरः सोभ्यासः पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः।

पवित्रण शतायुषा। पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।

पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा ॥⁸

7 ऋग्वेद - १०.८५.४७

8 यजुर्वेद - १९.३७, ३९

समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ॥¹⁶

इस प्रकार वेद भगवान् ने जनमानस को सद्गुणमय उपदेश देकर कौटुंबिक आदर्श प्रदर्शित किया है।

निष्कर्ष

अंततः निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है कि वैदिक साहित्य में परिवार केवल सामाजिक संगठन नहीं था बल्कि वह धर्म, संस्कार और संस्कृति का आधार स्तंभ था। यहाँ बड़ों का आदर, नारी का सम्मान और बच्चों को स्नेह तथा संस्कार प्राप्त होता था। घर और परिवार पहिए की धुरी के समान होते हैं जिसमें परिवार के सभी सदस्य पहिए की तीलियों की भांति समान रूप से कार्य करते हुए आपस में जुड़े रहते हैं।

किंतु अत्यंत खेद के साथ कहना पड़ रहा है कि वर्तमान में संयुक्त परिवार का चलन समाप्त होता जा रहा है। बच्चों को दादी, नानी जैसे अभिभावकों का संरक्षण नहीं मिल रहा है। माता-पिता स्वयं कामकाजी होने के कारण अपने बच्चों पर ध्यान नहीं दे पाते हैं। निरंतर बढ़ रहा पारिवारिक विघटन, आपसी सामंजस्य का अभाव युवकों में अकेलापन, विद्रोह एवं आपराधिक प्रवृत्तियों को बढ़ावा दे रहा है। वास्तव में यदि वेद वर्णित संस्कार विधि के अनुसार माता-पिता अपने बच्चों को सुसंस्कृत करें, उन्हें वेदानुकूल आचरण करने के लिए प्रेरित करें तो बालक श्रेष्ठ मनुष्य बन सकता है क्योंकि वेद विरुद्ध आचरण होने पर मानव का मानव धर्म निर्वाह करना संभव नहीं है जैसा की शास्त्र कहते हैं—‘आचार हीनं न पुनन्ति वेदाः।’ अर्थात् संस्कार विहीन व्यक्ति ना तो पवित्र होते हैं और ना ही पवित्र आचरण करते हैं। बाल्यावस्था में परिवार के बीच रहकर जो संस्कार मिलते हैं उनका प्रभाव अमिट होता है। किंतु आजकल तो धर्म का उपदेश देने वाले गुरु जनों में भी भौतिकता की आंधी चलना शुरू हो गई है यही कारण है कि पहले की अपेक्षा आज का बालक वेद, पुराण, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, गीता, योगादि की शिक्षा देने के उपरान्त भी संस्कारहीन होता जा रहा है। पहले एक समय था जब लोग टीवी जैसी गंभीर बीमारी को दूर करने के लिए डॉक्टर के पास जाकर उपचार से उसे दूर भगाते थे किंतु आज घर-घर टीवी ने प्रवेश कर जन-जन के मन, वाणी तथा इंद्रियों पर अपना आधिपत्य कायम कर लिया है। आजकल का युवक सिर्फ टीवी ही नहीं वरन् फेसबुक, व्हाट्सएप्प, एप्पल, गूगल, ट्विटर तथा इंस्टाग्राम जैसी लोकप्रिय सोशल मीडिया साइटों एवं डिजिटल प्लेटफॉर्म का अधिकाधिक प्रयोग करने के कारण साइबर बुलिंग का शिकार होकर अनिद्रा, चिंता, गुस्सा, यौन हिंसा और मानसिक विकारों से ग्रस्त हो रहे हैं। बच्चों को इन सभी सोशल मीडिया साइटों का अधिक इस्तेमाल करने से बचने की शिक्षा देनी चाहिए क्योंकि ‘अति सर्वत्र वर्जयेत्’। इसके लिए माता-पिता

अपितु हमारे आदर्श श्रीराम एवं भरतादि की भांति परस्पर प्रेम और समर्पण का भाव रखते हुए निःस्वार्थ रहें, बहन भी बहन से द्वेष न करे बल्कि सदैव प्रेम सद्भाव बनाए रखें। इसी प्रकार परिवार के अन्य सदस्यों सास-बहू, देवरानी-जेठानी इत्यादि को परस्पर शुभाचरण करने का उपदेश किया गया है।

वैदिक संहिताओं में बताया गया है कि परिवार के प्रत्येक सदस्य के सुखपूर्वक रहने के लिए उनके मध्य अनुकूलता का होना परम आवश्यक है—

“सस्तु माता सस्तु पिता सस्तु प्वा सस्तु विश्वपतिः ।

ससन्तु सर्वे ज्ञातयः सस्त्वयमभितो जनः” ॥¹²

“आत्मानं पितरं पिता पौत्रं पितामहम् जायां जनित्री मातरं ये प्रियास्तानुप ह्वये” ॥¹³

अर्थात् माता-पिता, ज्ञाति, बांधव, परिजन, पशु सब सुख पूर्वक रहें। आत्मीय जन, पितृ, पुत्र, पौत्र, पितामह, पितामही, माता और प्रिय जनों को मैं सम्मानपूर्वक बुलाता हूँ। इस प्रकार न केवल परिवार के प्रति अपितु परिवार से जुड़े हुए सभी सदस्यों के प्रति सद् व्यवहार की शिक्षा दी गई है। पारिवारिक सदस्यों के मध्य प्रेम का विस्तार और द्वेष का परिहार होना चाहिए क्योंकि प्रेम पारिवारिक बंधनों को मजबूत बनाता है। इसलिए वेद भगवान पुनः विशिष्ट दृष्टांत पूर्वक यही उपदेश करते हैं—

“सहृदयं सांमनस्य मविद्वेषं कृणोमि वः

अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाभ्य्या ॥”¹⁴

तात्पर्य यह है कि परिवार के छोटे-बड़े सभी सदस्यों का हृदय प्रेम सद्भाव युक्त हो तथा सभी सदस्य सामनस्य पूर्ण हों अर्थात् सभी का मन अच्छे विचारों, संस्कारों, संकल्पों एवं पवित्र भावनाओं से भरपूर हो, सभी वैमनस्य से निवृत्त हों तथा प्रेम, सद्भाव, सरलता, सुशीलता, विनय, विवेक आदि गुणों से युक्त हों। जिस प्रकार गाय अपने सद्योजात अभिनव बछड़े को अत्यंत स्नेह करती है ठीक वैसे ही तुम सब भी परस्पर विशुद्ध, निष्कपट, निःस्वार्थ, सरल तथा विनम्र स्वभाव बनाए रखो। वैदिक ऋचाओं में पारिवारिक सदस्यों को परस्पर मनानुकूल आचरण करने, मिलकर चलने तथा एकता का उपदेश दिया गया है—

‘संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानतां’¹⁵

“समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः ।

12 ऋग्वेद - ७.५५.५

13 अथर्ववेद - ९.५.३०

14 अथर्ववेद - ३.३०.१

15 ऋग्वेद - १०.१९१.२

अर्थात् पिता मुझे पवित्र करें, पितामह मुझे पवित्र करें जिससे मैं शतायु हो जाऊँ। मुझे समस्त देवगण पवित्र करें, मन और बुद्धि मुझे पवित्र करें, समस्त पंचभूत मुझे पवित्र करें, अग्नि देव मुझे पवित्र करें। यजुर्वेद के उक्त मंत्रों में वृद्ध जनों की सेवा और उनके प्रभाव से परिचित कराया गया है।

‘स्वस्ति मात्र उत पित्रे नो अस्तु’।⁹

अर्थात् प्रत्येक मनुष्य का धर्म है कि वह स्वगृहावस्थित प्रत्यक्ष देव रूप माता-पिता को सदैव संतुष्ट तथा प्रसन्न रखें। वेद हमें शिक्षा देते हैं कि अपने वृद्ध माता-पिता की कदापि उपेक्षा नहीं करनी चाहिए प्रत्युत उनकी अभीष्ट देववत् परिचर्या करना चाहिए—

“यदापिपेष मातरं पुत्रः प्रमुदितो धयन्।

एतत्तदग्ने अनृणो भवाम्यहतो पितरौ मया ॥”¹⁰

कहने का तात्पर्य यह है कि जब मैं छोटा सा असमर्थ शिशु था उस समय जिस विपुल स्नेहमयी माता की मधुरतामयी गोद में लेटकर प्रमुदित होकर जिसके अमृतमय स्तनों का पान करता हुआ पैरों के आघात द्वारा उसे पीड़ित करता रहा अब मैं उसके लालन-पालन आदि के द्वारा बड़ा हो गया हूँ और वह मेरे पूजनीय जनक एवं जननी वृद्ध हो गए हैं अतः अब मेरा यह दायित्व है कि मैं उनकी उचित सेवा सुश्रूषा करूँ उन्हें किसी भी प्रकार की पीड़ा ना पहुँचाऊँ जिससे वे सदैव संतुष्ट और प्रसन्न बने रहें और ऐसा करते हुए मैं मातृ पितृ ऋण का भी संपादन कर रहा हूँ। अथर्ववेद के अधोलिखित मंत्रों के द्वारा परिवार के समस्त सदस्यों को परस्पर कैसा आचरण करना चाहिए इस हेतु उपदेशित किया गया है—

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमना।

जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शान्तिवाम् ॥

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन् मा स्वसारमुत स्वसा

सम्यञ्च सव्रता भूत्वा वाचं वदतु भद्रया ॥”¹¹

अर्थात् पुत्र पिता के अनुकूल ही आचरण करें प्रतिकूल आचरण कदापि न करें माता की इच्छा का सम्मान करें भाव यह है की माता-पिता दोनों के प्रति सदा प्रेम सद्भाव पूर्ण आचरण करें इसी प्रकार उपलक्षण न्याय से पुत्री भी माता-पिता के अनुकूल ही कार्य करें, पत्नी अपने पति के प्रति मधुर, आह्लादक, सुखमयी वाणी ही बोले अर्थात् द्वेष एवं कुभावपूर्ण क्षोभप्रद कटु वाणी का प्रयोग ना करें, इसी प्रकार पति भी अपनी धर्मपत्नी के प्रति अच्छी वाणी का प्रयोग करें, भाई-भाई के प्रति दायभाग के निमित्त से विद्वेष न करें

9 अथर्ववेद - १.३१.४

10 शु. यजुर्वेद - १९.११

11 अथर्ववेद - ३.३०.२,३

को लापरवाही न बरतते हुए अपेक्षित नियंत्रण रखने की आवश्यकता है तथा उन्हें स्वयं भी आचरण और व्यवहार से आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए। घर का वातावरण शांत, सरस और मित्रता पूर्ण बनाना चाहिए। क्योंकि धन दौलत और परिवार बढ़ाने से मानव की उन्नति नहीं होगी उदाहरण स्वरूप रावण के पास तो सोने की लंका थी परंतु संस्कारहीन होने के कारण लंका का एवं उसके सारे कुटुंब का नाश हो गया जबकि उसी परिवार में विभीषण को अच्छे संस्कार मिले, संत महात्माओं का साथ मिला इसके कारण स्वयं परमात्मा श्री राम उसके पास मिलने आए और जब परमात्मा मिल गए तो सारे संसार का वैभव भी उसे स्वतः मिल गया। आज जब आधुनिक जीवन शैली पारिवारिक संस्था को कमजोर और खोखला बना रही है तब हमें वैदिक कालीन पारिवारिक आदर्शों को पुनर्जीवित करना चाहिए जिससे हमारा समाज और राष्ट्र सुदृढ़ तथा प्रगतिशील बन सके।

वैदिक शिक्षा सार्वकालिक एवं सार्वत्रिक है। वैदिक शिक्षा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी आदर्श परिवार निर्माण में मार्गदर्शिका है। इन शिक्षाओं के माध्यम से आदर्श परिवार की संकल्पना साकार हो सकती है।